आजीविका संवाद

जनवरी-मार्च, 2015

झारखण्ड स्टेट लाईवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी की त्रैमासिक पत्रिका.....

संपादक के कलम से ...

प्रिय साथियों,

जोहार !!

आजीविका संवाद के तीसरे अंक के साथ हम हाजिर हैं । इस अंक को समूह की दीदी को ध्यान में रखते हुए हर तरह से ज्ञानवर्धक बनाने की कोशिश की गई है । 'आजीविका संवाद' एक प्रयास है समूह की सदस्यों और आजीविका मिशन के बीच संवाद स्थापित करने का । हर अंक में 'आपका हक' कॉलम के तहत समुदाय को जागरूक बनाने के लिए सरकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी जा रही है । उम्मीद है कि आजीविका संवाद ग्रामीण महिलाओं की जिंदगी बदलने के अपने प्रयास में सफल रहेगी।

आजीविका संवाद के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं । पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर छपे पते पर आप हमें सुझाव भेज सकते हैं।

सोमारी टुटु
जागृति महिला समूह, गोईलकेरा, प॰ सिंहभूम

जेएसएलपीएस से माईक्रो इंटरप्राइज कंसलटेंट (एमईसी) की ट्रेनिंग लेने के बाद मेरा आत्मविश्वास बढ़ा है । अब मैं गांव की महिलाओं को बिजनेस के गुर सिखाती हूँ। ''एमईसी'' बनने के बाद मैं समूह की महिलाओं को किस कारोबार से फायदा हो सकता है, आर्थिक सहायता कैसे मिलेगी आदि की जानकारी देती हूँ । साथ ही अपना सिलाई सेंटर भी चला रही हूँ।

यशोदा देवी
चांद महिला समिति, नामकुम, रांची

समूह से जुड़कर मैंने बचत करना शुरू किया, घर के हालात तब ठीक नही थे । समूह से कर्ज लेकर दुकान खोली और आज मेरी आर्थिक स्थिति ठीक हो गई है । हमारा ग्राम संगठन भी बन चुका है और ग्राम संगठन के माध्यम से अब हमारा दायरा और हमारी ताकत भी बढ़ी है । समूह ने मेरी खोई हुई मुस्कान मुझे लौटा दी है ।

सुनिता टुडू - कपूरमूली आजीविका स्वयं सहायता समूह, महेशपुर, पाकुड़

समूह से जुड़ने के बाद मैं अपनी पढ़ाई दोबारा शुरू कर सकी, मैंने इंटरमीडिएट में दाखिला लिया है । मैं अपने समूह की सचिव तो हूँ ही साथ ही साथ इंटरनल सीआरपी के रूप में गांव की दूसरी महिलाओं को समूह से जोड़ने का काम कर रही हूँ । आजीविका से मिले प्रशिक्षण ने मुझमें आत्मविश्वास भर दिया है।

इस अंक में :

- ✓ खाद्य सुरक्षा प्रशिक्षण-एक जरूरत
- ✓ एक पहल महिला तस्करी के खिलाफ
- ✓ बैंक सखी - समूह को बैंक से जोड़ने ...
- ✓ मीना के हौसलों को सलाम
- ✓ समावेशी विकास के लिए कौशल विकास ...
- ✓ दिल से ...
- ✓ दीन दयाल उपाध्याय- ग्रामीण कौशल्य योजना
- ✓ सुक्ष्म ॠण योजना

खाद्य सुरक्षा प्रशिक्षण - एक जरूरत

झारखण्ड राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत पश्चिमी सिंहभूम के तीन प्रखण्ड मनोहरपुर, गोईलकेरा एवं खूंटपानी के सुदूर आदिवासी बहुल इलाकों के स्वंय सहायता समूह की सदस्यों को खाद्य सुरक्षा को लेकर जागरूक किया गया।

चेंचु खाद्य सुरक्षा सीआरपी ड्राइव का मुख्य उद्देश्य समूह के सदस्यों को खाद्य सुरक्षा को लेकर जागरूक करना था ताकि किसी को भी दो वक्त के अनाज की कमी न हो । इस पहल के तहत आंध्र प्रदेश से आए चेंचु सीआरपी समूह के द्वारा सुदूरवर्ती आदिवासी बहुल इलाकों के स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को खाद्य सुरक्षा के प्रति जागरूक किया गया और प्रशिक्षण दिया गया ।

प्रशिक्षण के दौरान आहार सुरक्षा सुक्ष्म प्रणाली के 5 कदम से भी समुदाय को अवगत कराया गया ।

1. समूह का समग्र समाचार ।
2. समूह के सदस्यों को व्यक्तिगत समाचार ।
3. क्रमानुसार सदस्यों के जरूरत की चीजों का दाम ।
4. 3 महीनों की आहार सुरक्षा के जरूरत चीजों के लिए ऋण की प्रणाली ।
5. करारनामा (सदस्य और समूह के बीच में करारनामा)।

इस प्रशिक्षण के बाद महिला सदस्यों में खासा उत्साह था। महिलाएं आत्मविश्वास के साथ ये बता रही थी कि समूह के माध्यम से एक बार में राशन लाने से उनको कम दाम में राशन मिल जाता है । साथ ही बार-बार बाजार जाने की जरूरत नहीं पड़ती है और भाड़े की बचत होती है ।

> ''पहले आधा पेट खाकर सोते थे, अब पूरा पेट खाकर काम करेंगे।''
> – मोईन सुरीन
> (सदस्य, आजीविका स्वयं सहायता समूह)

प्रशिक्षण के बाद इन स्वंय सहायता समूह की महिलाओं ने डिब्रिफिंग के दौरान अपने अनुभव साझा किए । खाद्य सुरक्षा प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके समूह की सदस्यों ने बताया कि समूह से ऋण लेकर सभी सदस्य अगर एक साथ राशन लाए तो 3 महीने के खर्च में 5 महीने का राशन आ जाता है। हमलोगों का खर्च बहुत कम हो गया है। इसके तहत हम समूह से ऋण लेकर भी 3 महीने का राशन ले आते हैं, फिर आसानी से चुका देते है ।

राम महिला समूह की संगीता देवी ने बताया कि ये बिल्कुल अलग अनुभव है । पहले हम साप्ताहिक राशन लेते थे अब हम पूरा 3 महीना का राशन ले रहे है । पहले साबुन 5 रूपये में लेते थे अब 4 रूपये में ले रहे हैं । जो चीज पहले खरीदते ही नहीं थे, अब ले रहे हैं – जैसे : आटा, तेल, बरतन, साबुन, टुथ-ब्रश और मिक्स मशाला ।

बैंक सखी - समूह को बैंक से जोड़ने की एक कड़ी

वित्तीय समावेशन कार्यक्रम के तहत बैंक सखी का प्रशिक्षण कार्यक्रम दुमका में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बैंक सखी के रूप में चुनी गई समूह की सदस्य को बैंक से जुड़े शब्दावली और बैंकिग क्रियाकलापों से रूबरू कराना था। साथ ही बैंक सखी के रूप में उनको सौंपी जाने वाली बड़ी जिम्मेदारी के लिए उन्हें तैयार करना था। पांच दिवसीय इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में दुमका, पाकुड़, गोडड्ा के 32 बैंक सखी उपस्थित थी, इन प्रतिभागियों को राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, बैंक सखी की अवधारणा, स्वंय सहायता समूह का महत्व तथा बैंकिंग शब्दावलियों की जानकारी दी गई। उसके बाद वित्तीय साक्षरता सत्र के दौरान प्रतिभागियों को बैंक खाता खोलने की प्रक्रिया, जरूरी दस्तावेज, नकद जमा, जमा निकासी, पासबुक अपडेट करना जैसे कार्यों के बारे में विस्तार से समझाया गया। इसके अलावा स्वयं सहायता समूह को ऋण देने के लिए जरूरी दस्तावेज एवं अन्य बैंकिग और वित्तिय क्रियाकलापों की जानकारी दी गई। आखिरी के दिनों में बैंक सखी प्रशिक्षुओं को वनांचल ग्रामीण बैंक के शाखा में ले जाकर बैंकिग प्रक्रिया को समझाया गया, साथ ही बैंक कर्मियों से परिचय कराया उनके कार्यों के बारे में बैंक सखी को बताया गया ताकि भविष्य में गरीब ग्रामीणों को बैंकिंग सहयोग देते समय बैंक सखी को हर छोटे-बड़े बैकिंग आयाम की जानकारी हो।

सत्र के अंतिम दिन बैंक सखी को समुदाय आधारित वसूली प्रक्रिया (CBRM) की संरचना, कामकाज एवं अन्य पहलुओं की जानकारी दी गई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भारतीय स्टेट बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक एवं वनांचल ग्रामीण बैंक के महाप्रबंधक ने बैंक सखी से बातचीत कर उनका मनोबल बढ़ाया एवं बैंक से जुड़े कई पहलुओं को समझाया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में बैंक सखियों को उनकी भूमिका और जिम्मेदारियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई।

तो समूह की दीदी हो जाइए तैयार अब आपके नजदीकी बैंक में भी जल्द ही बैंक सखी की होगी नियुक्ति जो बैंक से जुड़ी हर परेशानी को करेंगी दूर।

बैंक सखी - झारखण्ड स्टेट लाईवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी ने आजीविका मिशन के तहत गांव की गरीब महिलाओं के अनुकूल बैंकिग प्रक्रिया को तैयार करने के लिए बैंक सखी को हर बैंक में पदस्थापित करने की ठानी है। ये बैंक सखी गांव की गरीब, कम पढ़ी-लिखी ग्रामीण महिलाओं और परिवारों को बैंकिंग प्रक्रिया में मदद करेगी। जैसे - फॉर्म भरना, दस्तावेज प्रक्रिया के हिसाब से जमा करना, पासबुक से जुड़े काम करना, ऋण से संबंधित प्रक्रिया में मदद करना। बैंक सखी गरीब गांव की महिला को बैंक में होने वाली दिक्कतों को खत्म करने के लिए एक पहल है। हर गांव की महिला व सखी के रूप में बैंक में उपस्थित रहेगी एवं सबकी मदद करेगी। अब तक 57 बैंक सखी को विभिन्न बैंक में पदस्थापित किया जा चुका है।

जन - जागरूकता से रूकेगा महिला तस्करी...

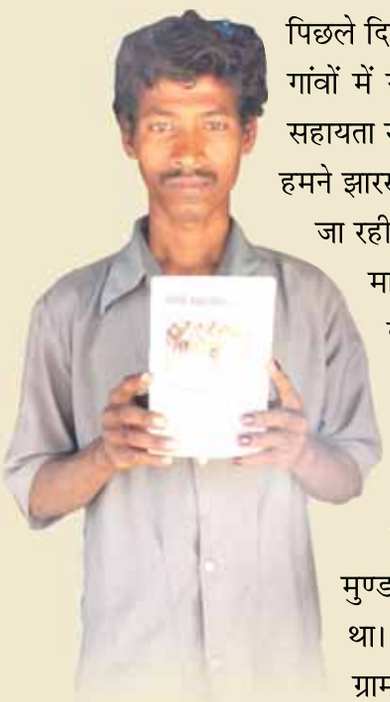

पिछले दिनों प्रोजेक्ट से जुड़े कार्यों को लेकर मैं और कार्यक्रम प्रबंधक - एमआईएस पश्चिमी सिंहभूम के कई गांवों में गए । वहां हमें दर्जनों स्वंय सहायता समूह की दीदी से मिलने का मौका मिला, वहीं कई स्वंय सहायता समूह की मीटिंग में भी हमलोगों ने शिरकत किया । पश्चिमी सिंहभूम की अपनी इस यात्रा के दौरान हमने झारखण्ड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी की ओर से महिला एवं बालिका तस्करी को लेकर चलाई जा रही नुक्कड़ नाटक सह जागरूक अभियान में भी भाग लिया । नुक्कड़ नाटक से गांव की महिलाओं को मानव तस्करी से जुड़ी बारीकियों के बारे में जानकारी मिल रही थी । नुक्कड़ नाटक का मुआयना करने के बाद हमलोग आजीविका से जुड़ी और गतिविधियों से रूबरू हुए । पश्चिमी सिंहभूम के खूंटपानी ब्लॉक का एक संस्मरण मैं आपके साथ बांट रहा हूँ ।

यात्रा वृतांत
- कुमार विकास

25 फरवरी को सुबह हमलोग पश्चिमी सिंहभूम के खूंटपानी प्रखण्ड के अरगुंडी गांव में पहुंचे, जहां हमलोगों को शांति महिला स्वंय सहायता समूह की बैठक में भाग लेना था । बैठक गांव के मुण्डा टोला स्थित समूह की सदस्य प्रियंका जामदा के घर पर रखा गया था। समूह की बैठक खत्म होने के बाद समूह की दीदी लोगों से हमलोगों ने उनकी बैठक, कर्ज वापसी, ग्राम संगठन, समूह से हो रहे फायदे, कर्ज वापसी के बारे में जानकारी ली । समूह की बैठक के दौरान एक व्यक्ति समूह की सदस्यों के बगल में बैठा था । उत्सुकतावश हमलोगों ने पूछा कि ये भाई साहब कौन है । समूह की कोई सदस्य जवाब दे उससे पहले उसी व्यक्ति ने बताना शुरू किया कि मेरी पत्नी इस समूह की सदस्य है, बैठक आज मेरे घर में ही हो रही है, मेरी पत्नी काम करने गई है सो मैं यहां बचत राशि जमा करने के लिए बैठा हूं। हमने सोचा की उस शख्स की पत्नी खेत में कुछ काम करने या घर के कुछ काम से आस-पास गई होगी, बैठक खत्म होने तक जब उनकी पत्नी नहीं लौटी तब फिर हमने उनसे पूछा कि आपकी पत्नी अभी तक नहीं लौटी, तो रूंधे गले उस शख्स ने बताया कि वो काम करने दूसरे प्रदेश गई है। वो वापस लौटना चाह रही है लेकिन लौट नहीं पा रही है । इतना बोलते ही मानो वहां सन्नाटा पसर गया था, फिर हमलोगों ने उस शख्स से उसकी कहानी जानने की कोशिश की ।

बातचीत शुरू होते ही कृष्णा जामदा की आंखे नम हो गई, उसने बताया की मैं अब थक गया हूं। पता नहीं मेरी पत्नी अब कभी लौट भी पाएगी या नहीं । कृष्णा जामदा के मुताबिक उसकी पत्नी का नाम है प्रियंका जामदा, प्रियंका शांति महिला समूह की सदस्य है, 15 फरवरी 2013 को प्रियंका समूह से जुड़ी थी और समूह से जुड़ने के बाद प्रियंका धीरे-धीरे गरीबी के चंगुल से बाहर निकल रही थी। तभी अचानक प्रियंका की माँ की मृत्यु हो गई और प्रियंका अपने पति कृष्णा जामुदा के साथ अपनी मां के गांव आमराय जाती है । कृष्णा कुछ दिनों के बाद वापस अरगुंडी आ जाता है वहीं प्रियंका अपनी माँ के घर में ही रूक कर छोटी बहन और भाई को बुरे वक्त में सहारा दे रही थी । उसी क्रम में उसकी मुलाकात गांव के एक शख्स कान्हु से होती है । कान्हु समझ जाता है की प्रियंका के घर की आर्थिक स्थति ठीक नहीं है, फिर क्या था। कान्हु प्रियंका को बड़े शहर में अच्छी नौकरी और ज्यादा पैसे कमाने का सपना दिखाना शुरू करता है और जल्द ही प्रियंका और उसकी छोटी बहन दोनों को कान्हु समझा बुझाकर दूसरे प्रदेश में छोड़कर चला आता है । प्रियंका के पति कृष्णा को इस बात की कोई खबर नहीं थी, बाद में कृष्णा को इस बात की खबर प्रियंका के चचेरा भाई देता है कि प्रियंका कान्हु के साथ नौकरी करने तमिलनाडु चली गई है ।

प्रियंका जामदा और उसकी छोटी बहन

कृष्णा जामदा इतना बताते हुए बिलख कर रो पड़ता है, नम आंखों से वो आगे बताता है, कि उसकी पत्नी प्रियंका अपनी बहन के साथ तमिलनाडु के धागा के फैक्ट्री में काम कर रही है, वो वापस आना चाहती है लेकिन उसे वापस लौटने नहीं दिया जा रहा है । फैक्ट्री के अधिकारी उसे बोलते है कि जो तुमको यहां लेकर आया था वह व्यक्ति वापस आएगा तभी तुमको छोड़ा जा सकता है । डभडभायी आंखों से कृष्णा आगे बताता है कि वह लगातार आमराय गांव जा रहा है कान्हु की तलाश में, लेकिन वह फरार बताया जा रहा है, वहीं कृष्णा कान्हु जैसे कुछ और दलालों से संपर्क साधने की भी कोशिश कर रहा है ताकि वह अपनी पत्नी को छुड़ा सके । कृष्णा से उसकी पत्नी की आखिरी बार बात कुछ ही दिनों पहले हुई है, इस बातचीत के बारे में कृष्णा बताता है कि वहां उससे 12 घंटे काम कराया जाता है और बदले में 3000 रुपये वेतन दिया जाता है । बंधुआ मजदूर के रूप में फंस चुकी प्रियंका ने अपने पति को बताया कि तबियत खराब रहने पर भी उससे जबरन काम कराया जाता है । कृष्णा जामुदा पूरी तरह से हताश और निराश है उसे कुछ भी समझ में नही आ रहा है कि वो अपनी पत्नी को वापस लाने के लिए क्या करें । हमलोगों ने समूह की सभी उपस्थित सदस्यों को इस मामले को ग्राम संगठन में उठाने की सलाह दी और ग्राम संगठन के माध्यम से नजदीकी थाने में शिकायत दर्ज कराने की बात कही । आजीविका मिशन की प्रखण्ड मिशन प्रबंधन इकाई प्रियंका को वापस लाने का प्रयास कर रही है ।

तो अब आप समझ गए होंगे ये संस्मरण चिंतनीय क्यों हैं, झारखण्ड के ग्रामीण इलाकों से महिलाओं, बच्चियों की तस्करी लगातार जारी है, हर दूसरे-तीसरे गांव में एक प्रियंका दलालों के लुभावने लालच में पड़कर बड़े-बड़े सपने लेकर दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता जाती हैं और फिर वहां की चकाचौंध में फंसकर लगातार शोषण की शिकार होती रहती हैं, यहां तक की चाहते हुए भी ये बच्चियां और महिलाएं वापस नहीं आ पाती हैं । हर साल अकेले झारखण्ड से करीब 33 हजार बालिकाओं की तस्करी होती है, ये सभी गरीब परिवार से होती हैं और दो वक्त की रोटी और अच्छी सैलरी के चक्कर में दलाल इन्हें अपने जाल में फंसा लेता है ।

इस यात्रा वृतांत को आपके सामने रखने के पीछे मेरा मकसद ये था कि आपके गांव में भी अगर कोई कान्हु जैसा दलाल दिखता है तो तुरंत पुलिस को खबर करें, कोई भी अनजान या जान पहचान का व्यक्ति अगर आपको दिल्ली, मुंबई में अच्छी नौकरी दिलाने की बात करता है तो उसके झांसे में न आए । मैं समूह की सभी दीदी से आग्रह करता हूं कि सामाजिक एजेंडा के माध्यम से इस पर चर्चा कर ऐसे दलालों और महिला तस्करी के बारे में अपने गांव को जागरूक कर झारखण्ड से महिला एवं बालिका तस्करी खत्म करने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाए ।

दिल से ...

नाम	:	सरिता देवी
समूह का नाम	:	सरस्वती श्री महिला समूह
गांव	:	कुटियातु
प्रखण्ड	:	नामकुम
समूह से जुड़ने की तिथि	:	22.02.2014
छोटा ऋण (कुल राशि)	:	500 रूपये-एक बार
बड़ा ऋण (कुल राशि)	:	71,000 रूपये - छः बार
प्रशिक्षण	:	समूह प्रशिक्षण, बुक कीपिंग, रिसोर्स बुक कीपर
भाषा	:	नागपुरी, हिन्दी
रूचि	:	यात्रा करना
पसंद	:	महिलाओं से बात करना एवं अपने हक के लिए जागरूक करना
नापसंद	:	पीठ पीछे बुराई करना
सबसे खुशी का पल	:	इंतजार है, अभी तक खुशी का पल आया नहीं है ।
सबसे दुखद पल	:	वो दिन जब मेरे पति एक दुर्घटना में बुरी तरह घायल हो गए थे और मैं असहाय थी।
समूह ने पूरा किया सपना	:	मुझे घूमने का शौक है और समूह की वजह से मुझे अपने राज्य से बाहर आंध्र प्रदेश प्रशिक्षण के लिए जाने का मौका मिला ।
जिंदगी में बदलाव	:	समूह से जुड़ने के बाद मेरी जिन्दगी बदल गई।
सपने जिनको पूरा करना है	:	मुझे ग्रेजुएट बनना है और अपनी तनख्वाह से स्कूटी खरीदना है ।
पसंदीदा खाना	:	अपने हाथों का बना सादा खाना (दाल-रोटी) ।
पसंदीदा रंग	:	आसमानी ।
पसंदीदा फिल्म	:	नदिया के पार ।
समूह, क्या है आपके लिए	:	समूह मेरी जिंदगी के समान है ।
एक ख्वाब	:	एक घर और कार मेरा अपना हो । साथ ही घरेलू हिंसा की शिकार महिलाओं की मदद करना ।

मीना के हौसले को सलाम

हौसले अगर बुलंद हो तो इंसान अपने मकसद में जरूर कामयाब होता है। पाकुड़ जिला के तैलिया पोखर पंचायत के नंदनपड़ा गांव (महेशपुर ब्लॉक) की मीना बेगम ने अपने जज्बे से गरीबी को मात देकर ये साबित कर दिया । सफेद स्कूटी से पाकुड़ के सुदूरवर्ती गांव में मीना को घूमते देख आप भी चौक जाइएगा । लेकिन मीना मिसाल है कि कैसे झारखण्ड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए प्रयासरत हैं ।

दो साल पहले तक मीना के परिवार को जहां घर के खर्च तक का दिक्कत था वही आज मीना के लगन ने पूरे परिवार को गरीबी से बाहर निकाला । मीना बताती है कि आजीविका मिशन के समूह से जुड़कर उसे नई जिन्दगी मिली और उसने कुछ करने को ठाना । मीना लगन और मेहनत से अपने समूह, को ''नई दिशा स्वयं सहायता समूह'' को मजबूत करने के लिए काम करने लगी । बुरे दिनों में समूह से कर्ज लेकर घर का खर्च चलाया पिता का ईलाज कराया साथ ही पढ़ाई भी की । मीना समूह से जुड़ी हर छोटी बड़ी कार्य को मेहनत से करती थी और समय समय पर आजीविका के तहत क्षमतावर्धन गतिविधियों में भी भाग लेती थी। मीना का मेहनत रंग लाया और मीना आज आजीविका मिशन के रोलाग्राम कलस्टर में प्रशिक्षु कम्युनिटी कार्डिनेटर के रूप में कार्य कर रही है ।

पुराने दिनों को याद कर मीना की आंखे भर आती है कि कैसे वे लोग महाजन के आंतक से परेशान रहते थे और सिलाई करके घर का खर्च चलाती थी। लेकिन समूह से जुड़ने के बाद आर.एफ. और सी.आई.एफ. से मिले पैसे ने उसकी जिन्दगी बदल दी । मीना ने छोटी बचत शुरू करके एक स्कूटी भी खरीद ली है । अपनी स्कूटी से मीना अब गांव–गांव घूमकर स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को प्रशिक्षण देती है । महिलाओं का खाता खुलवाती है और व उन्हें समूह से जुड़ने के फायदे बताती है । अब मीना महीने में 8000 हजार रूपये कमा लेती है ।

मीना प्रशिक्षु कम्युनिटी कॉर्डिनेटर के पद पर काम करने के अलावा बकरी और गाय पालन भी पट्टा पर करवाती है । चेहरे पर तेज और आत्मविश्वास से भरी मीना बताती कि आजीविका मिशन से जुड़कर उसकी परेशानियां खत्म हुई और अब वो भी दूसरी गरीब महिलाओं की परेशानी खत्म करने के लिए काम कर रही है।

आत्मविश्वास से लबरेज मीना ने अपने बचत के पैसे से और महीने की तनाख्वाह से स्कूटी खरीदी है और बताती है कि ये स्कूटी रात में किसी की तबियत खराब होने पर एंबुलेस की तरह काम करती है ।

कभी सिलाई करके घर का खर्च चलाने वाली मीना बेगम ने मेहनत के दम पर आजीविका से जुड़कर एक नई मुकाम हासिल की है । मीना आज अपने क्षेत्र में ट्रेनर के रूप में जानी जाती है । जो ग्रामीण महिलाओं को समूह से जोड़ती है और समूह से जुड़ी हर तरह का प्रशिक्षण भी गांव की महिलाओं को देती है । साथ ही मीना अपने इलाके की हर स्वंय सहायता समूह की बैठक में भाग लेकर उनको मजबूत करने के लिए काम कर रही है। अब मीना को गांव की महिलाएं समूह वाली दीदी के नाम से भी पुकारती है ।

चित्रमय समाचार

महिला एवं बाल तस्करी के रोकथाम हेतु नुक्कड़ नाटक के माध्यम से ग्रामीणों को जागरूक किया गया।

स्वच्छ भारत मिशन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु नामकुम प्रखण्ड के स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने स्वच्छता रैली निकाल कर गाँव की सफाई की ।

छठा इंटरनल सीआरपी राउण्ड बुंडु प्रखण्ड के गांव की महिलाओं को समूह में जोड़ने के लिए चलाया गया। इस सीआरपी राउण्ड की चुनौतियों और अनुभव को सीआरपी दीदी ने डीब्रिफिंग सेशन में साझा किया।

सरस मेला के दौरान स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने महासम्मेलन का आयोजन कर महिला शक्ति को प्रदर्शित करते हुए रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया ।

चित्रमय समाचार

दीन दयाल उपाध्याय–ग्रामीण कौशल्य योजना अंतर्गत रोशनी कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण पा रही छात्राएं।

सक्रिय महिलाओं के लिए दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, प्रशिक्षण के बाद महिलाएं इंटरनल सीआरपी के रूप में काम कर सकेंगी। महिलाएं सामुदायिक ट्रेनर के रूप में भी काम करेंगी।

पाकुड़ में 26 जनवरी 2015 की झांकी में जेएसएलपीएस की झांकी ने जिले में दूसरे स्थान प्राप्त किया ।

8वां राज्य स्तरीय बैंकर्स कमेटी की मीटिंग 5 दिंसबर 2014 को झारखण्ड स्टेट लाईवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी के कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित की गई। बैठक में प्रधान सचिव, ग्रामीण विकास विभाग, श्री एन.एन.सिन्हा एवं सभी बैंक के प्रतिनिधि मौजूद थे।

समावेशी विकास के लिए कौशल विकास जरूरी - इंडस्ट्री रूरल इंडिया स्किल कनेक्ट

इंडस्ट्री रूरल इंडिया स्किल कनेक्ट कार्यक्रम का आयोजन झारखण्ड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी, ग्रामीण विकास विभाग, झारखण्ड सरकार और ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में खेलगांव, होटवार, रांची में किया गया । इस कार्यक्रम का अयोजन दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के तहत रोशनी कार्यक्रम के सफल प्रशिक्षुओं के दीक्षांत समारोह के अवसर पर किया गया । दिनांक 17 फरवरी को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर झारखण्ड के मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास मौजूद थे। वहीं विशिष्ट अतिथि के तौर पर केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री चौधरी विरेन्द्र सिह ने भी कार्यक्रम में शिरकत की । इंडस्ट्री रूरल इंडिया स्किल कनेक्ट कार्यक्रम के अवसर पर केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्री सुदर्शन भगत एवं झारखण्ड के ग्रामीण विकास मंत्री श्री नीलकंठ सिंह मुण्डा भी मौजूद थे। इस कार्यक्रम में उद्योग से जुड़े लोगों ने भी भाग लेकर अपने विचार रखें ।

रूरल इंडिया स्किल कनेक्ट कार्यक्रम के पीछे की सोच थी कि इस कार्यक्रम में उद्योग से जुड़े लोगों और रोशनी के तहत प्रशिक्षित छात्रों को एक मंच दिया जा सके ताकि उद्योग जगत से जुड़े लोगों को भी पता चल सके कि दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के तहत कैसे विश्वस्तरीय इन्फ्रास्ट्रक्चर में गांव के गरीब युवक युवतियों को विभिन्न ट्रेड्स में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत ग्रामीण विकास विभाग के प्रधान सचिव, श्री एन एन सिन्हा ने किया । इस अवसर पर उपस्थित छात्रों को प्रमाण पत्र वितरण किया गया । दीन दयाल ग्रामीण कौशल्य योजना के तहत निर्धन ग्रामीण गरीब युवाओं को नि:शुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है, इसकी जानकारी गांव के गरीब परिवार तक पहुंचाने के लिए इस कार्यक्रम में करीब 5000 स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को आमंत्रित किया गया था । कार्यक्रम के दौरान रोशनी के तहत प्रशिक्षित एवं नौकरी पा चुकी बेबी कुमारी ने अपनी अनुभव साझा करते हुए बताया कि कैसे रोशनी के तहत मिले प्रशिक्षण के बाद नौकरी पाकर आज वो अपने परिवार के लिए दो वक्त की रोटी जुटा पा रही है ।

बेबी की तरह उपस्थित सैकड़ो प्रशिक्षित युवाओं के चेहरे पर रोशनी की सफलता की चमक साफ झलक रही थी, सुदूर गांव से आई स्वयं सहायता समूह की सदस्य महिलाओं ने भी बातचीत के दौरान बताया कि अब वे अपने गांव के बेरोजगार गरीब युवाओं को भी रोशनी के तहत दिए जा रहे कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामांकन करवाने के लिए प्रोत्साहित करेंगी । कार्यक्रम में उपस्थित झारखण्ड के माननीय मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास, केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री माननीय श्री चौधरी वीरेन्द्र सिंह, झारखण्ड ग्रामीण विकास मंत्री माननीय श्री नीलकंठ सिंह मुण्डा एवं केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री माननीय श्री सुदर्शन भगत ने रोशनी परियोजना के उर्त्तीण हुए छात्रों को प्रमाण पत्र और नियुक्ति पत्र वितरण कर उनकी हौसला अफजाई की ।

सुक्ष्म ऋण योजना

सुक्ष्म ऋण योजना क्या है ?

सुक्ष्म ऋण योजना के अन्तर्गत स्वंय सहायता समूह के सभी सदस्य मिलकर अपने आर्थिक स्थिति की चर्चा करते हुए, अपने विकास के लिए योजना तैयार करते हैं । सुक्ष्म निवेश की योजना जो पूरी तरह से गरीबी के कुचक्र से बाहर आने के लिए बनाई जाती है उसे सुक्ष्म ऋण योजना कहते हैं ।

सामान्यत : यह योजना स्वंय सहायता समूह के सदस्य प्रति वर्ष बनाते है और इसकी निरन्तर समीक्षा की जाती है। सुक्ष्म ऋण योजना को ही सुक्ष्म योजना अथवा सुक्ष्म निवेश योजना के नाम से भी जाना जाता है ।

सुक्ष्म ऋण योजना बनाने के लाभ :

- ❑ सभी सदस्यों की आर्थिक स्थिति के बारे में पता चलता है।
- ❑ समूह के सदस्य मिलकर आर्थिक सहयोग के लिए प्राथमिकता तय करते हैं और गरीब सदस्यों को प्राथमिकता दी जाती है ।
- ❑ सदस्य अपने आय के स्रोत को देखते हुए अपने आय के स्रोत को सशक्त करने के लिए ऋण की मांग करते हैं ।
- ❑ आवश्यकतानुसार ऋण के सही उपयोग एवं समय पर वापसी की योजना बनाई जाती है ।
- ❑ व्यय में फिजुल खर्चों को पहचान कर उन्हें कम करने की योजना बनाई जाती है ।
- ❑ दूसरों पर निर्भरता कम करते हुए सभी को स्वावलंबी बनाने की योजना बनाई जाती है।

सुक्ष्म ऋण योजना बनाने के लिए समूह की योग्यता :

- ❑ गरीब महिलाओं का समूह होना चाहिए।
- ❑ समूह कम से कम 6 माह पुराना होना चाहिए तथा नियमित रूप से पंच-सूत्र का पालन करना चाहिए (पंच-सूत्र- नियमित सप्ताहिक बैठक, नियमीत सप्ताहिक बचत, नियमित अन्तरिक लेन-देन, नियमित ऋण वापसी एवं नियमित रूप से समूह के सभी पुस्तकों का लेखांकन)
- ❑ समूह का बचत बैंक खाता होना चाहिए ।

सुक्ष्म ऋण योजना बनाने के लिए समूह की योग्यता

- ❑ समूह की समग्र स्थिति
- ❑ समूह के सदस्यों के परिवार की स्थिति
- ❑ सदस्यों के आय व्यय का ब्योरा
- ❑ पूंजी निवेश योजना
- ❑ ऋण में प्रथम प्राथमिकता वाले सदस्यों का विवरण
- ❑ ऋण में द्वितीय प्राथमिकता वाले सदस्यों का विवरण

एकरारनामा :-

- ❑ सदस्य और समूह के बीच
- ❑ समूह और ग्राम संगठन के बीच
- ❑ ग्राम संगठन और क्लस्टर सगंठन के बीच

सामुदायिक निवेश निधि **(CIF)**

स्वंय सहायता समूह के सदस्यों के आजीविका के विकास के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से प्राप्त होने वाले आर्थिक सहायता को सामुदायिक निवेश निधि कहते हैं ।

सामुदायिक निवेश निधि किसी भी समूह को सुक्ष्म ऋण योजना बनाने के बाद ही मिलती है। यह राशि सुक्ष्म ऋण योजना बनाने के समय प्रथम प्राथमिकता के आधार पर सदस्यों द्वारा मांगी गई ऋण राशि या फिर 75000/- में से जो कम हो मिलता है।

सामुदायिक निवेश निधि परियोजना की तरफ से क्लस्टर लेवल फेडरेशन को अनुदान के रूप में दिया जाता है । फेडरेशन से ग्राम संगठन तथा ग्राम संगठन से स्वंय सहायता समूह अपने आवश्यकता के अनुसार ऋण लेते हैं । समूह अपने द्वारा तैयार किये गए सुक्ष्म ऋण योजना के अनुसार सदस्यों को ऋण उपलब्ध कराता है। हर स्तर पर ऋण वापसी तय किस्तों के आधार तथा एक निश्चित व्याज के साथ की जाती है। हर स्तर पर ऋण वापसी की किस्तों की संख्या एवं ब्याज दर अलग अलग होती है एवं यह आपसी सहमती से तय की जाती है ।

दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना : अब हर ग्रामीण बनेगा हुनरमंद

DDU-GKY
Deen Dayal Upadhyaya Grameen Kaushalya Yojana
Empowering India • Powering the World

दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना, भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय की ओर से युवाओं को कौशल एवं रोजगार से जोड़ने का एक अनूठा प्रयास है। यह पहल गरीब ग्रामीण युवाओं को रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण प्रदान कर उनको आमदनी के विभिन्न स्रोत उपलब्ध कराने की जरूरत और ग्रामीण युवाओं की व्यवसायिक आकांक्षाओं की पूर्ति करने के उद्देश्य से शुरू की गई। इस कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य गरीब ग्रामीण युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित कौशल का प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार उपलब्ध कराना है ।

आधुनिक बाजार में भारत के ग्रामीण निर्धनों को आगे लाने में कई चुनौतियां हैं, जैसे औपचारिक शिक्षा और बाजार के अनुकूल कौशल की कमी होना। विश्वस्तरीय प्रशिक्षण, वित्तपोषण, रोजगार उपलब्ध कराने पर जोर देने, रोजगार स्थायी बनाने, आजीविका उन्नयन और विदेश में रोजगार प्रदान करने जैसे उपायों के माध्यम से डीडीयू–जीकेवाई इस अंतर को पाटने का काम करती है ।

वर्त्तमान में डीडीयू–जीकेवाई के अन्तर्गत झारखण्ड में 2 कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं । एक ओर जहां रोशनी कार्यक्रम LWE जिलों में चलाया जा रहा है, जिसमें गुमला, चतरा, गढ़वा, लातेहार, पलामू और प. सिंहभूम है । वहीं दीन दयाल उपाध्याय–ग्रामीण कौशल्य योजना के अन्तर्गत शेष 18 जिलों में ग्रामीण युवकों को कौशल प्रशिक्षण देने की शुरूआत की जाने वाली है।

मुख्य विशेषताएं :

1. 3/6/9/12 माह के रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण हेतु आवासीय एवं गैर आवासीय कौशल प्रशिक्षण ।
2. आवासीय प्रशिक्षण के लिए युवक एवं युवतियों को अलग–अलग छात्रावास एवं भोजन की सुविधा ।
3. 1 साल के प्रशिक्षण से नेशनल ओपन स्कूल द्वारा 8वीं, 10वीं एवं 12वीं पास का प्रमाण पत्र ।

- सभी छात्रों को कम से कम 576 घंटो का व्यवसायिक प्रशिक्षण।
- केन्द्र और राज्य सरकार की निगरानी में कार्यान्वित ।
- 75 प्रतिशत प्रशिक्षित युवाओं को न्यूनतम मजदूरी से ज्यादा आय पर सुनिश्चित रोजगार ।
- रोजगार दिलाने के बाद भी करियर प्रगति के लिए सहयोग ।
- गैर आवसीय प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं को भोजन और यात्रा भत्ता की सुविधा।

योग्यताएं :

- उम्र : 15 – 35 वर्ष (45 वर्ष विशेष रूप से आसुरक्षित जनजातीय समूह (PvTGs) एवं शारीरिक रूप से नि:शक्त व्यक्ति (PwD) के लिए ।
- BPL परिवार।
- न्यूनतम कार्यात्मक साक्षरता।
- पढ़ाई छोड़ चूके एवं गरीब बेरोजगार युवक/युवतियों को प्राथमिकता ।

कौशल प्रशिक्षण के क्षेत्र : ऑटोमोबाईल, ड्राइविंग, भवन निर्माण, खाद्य प्रसंस्करण, इलेक्ट्रिकल, बैंकिंग, पर्यटन, टेक्सटाईल, हॉसपिटैलिटी, सिक्यूरिटी सर्विसेज, ब्यूटीशियन, खनन, मेटल इंडस्ट्री, वस्त्र उद्योग इत्यादि ।

झारखण्ड स्टेट लाईवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी

(ग्रामीण विकास विभाग, झारखण्ड सरकार)
तृतीय तल, शांतिदीप टावर, रेडीयम रोड, रांची– 834001

National Rural Livelihoods Mission

: 0651-2360053/2360391 jslps.ranchi@gmail.com www.jslps.org facebook.com/onlineJSLPS

संपादक : कुमार विकास, कार्यक्रम प्रबंधक–मीडिया एवं संचार । ई–मेल : kmc@jslps.in

(झारखण्ड राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा स्वयं सहायता समूहों में आंतरिक वितरण के लिए)